नरसिंह मेहता के काव्य में शृंगार पक्ष

डॉ. मेनका कुमारी

रस काव्य का एक प्रमुख पक्ष है। भारतीय काव्यशास्त्रो के अनुरूप शृंगार, हास्य, रौद्र, करुण, वीभत्स, भयानक, वीर, अद्‌भुत और शांत जैसे रसों की कल्पना की गई है। कई आचार्यों द्वारा शृंगार रस को सबसे प्रमुख माना गया है। शृंगार रस को रसराज की भी संज्ञा दी गई है। शृंगार रस के भेद हैं–संयोग (संभोग) शृंगार और वियोग (विप्रलंभ) शृंगार। वियोग शृंगार के भी चार भेद माने गए हैं–पूर्वराग, मान, प्रवास और करुण। प्रस्तुत शोध पत्र में गुजराती भक्त कवि नरसिंह मेहता के काव्य में निहित शृंगार की परख की जा रही है। नरसिंह मेहता एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने भक्ति आंदोलन को अखिल भारतीय स्वरूप देने में महत्ती भूमिका निभाई है। 'वैष्णव जन तो तेने कहीअे जे पीड पराई जाणे रे' जैसा पद भारत के समस्त क्षेत्रो में लोकप्रिय हुआ। अतः नरसिंह मेहता के काव्य का मूल्यांकन मध्यकालीन साहित्य के संदर्भ में प्रासंगिक होगा।